आदिकालीन इतिहास

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय
दो

स्वर्गलोक खो गया और पाया गया

THIRD MILLENNIUM
MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-सूची

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका 4

तैयारी.. 5

नोट्स.. 6

I. परिचय (0:25).. 6

II. साहित्यिक संरचना (2:23).. 6

A. सिंहावलोकन (3:03) 6

1. वाटिका में (3:31) 6
2. उन्नत परिस्थिति (4:09) 6
3. श्रापित परिस्थिति (4:59) 7
4. अदन से बाहर (5:35) 7

B. समरूपता (6:29) 8

1. आरम्भ और अन्त (7:01)..8
2. मध्यांतर के हिस्से (10:34) 9

III. मूल अर्थ (13:47)...10

A. वाटिका (15:19) 10

1. पहचान (16:11) 10
2. पवित्रता (22:14) 11

B. विश्वासयोग्यता (29:31)...13

1. अदन में (30:29) 13
2. कनान में (31:43) 13

C. परिणाम (35:46) 14

1. मृत्यु (36:23)..14
2. पीड़ा (38:54)..15
3. बहिष्करण (40:57) 15

IV. आधुनिक उपयोग (43:57) 15

A. उदघाटन (45:18)...15

1. पौलुस (45:43) 16

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. मत्ती (48:47) 16
B. निरन्तरता (52:18) 17
1. पौलुस (52:48) 17
2. याकूब (53:55) 18
C. पराकाष्ठा (55:38) 18
1. रोमियों (56:03) 18
2. प्रकाशितवाक्य (57:02) 18

V. सारांश (59:28) 19

पुनर्समीक्षा के प्रश्न 20

उपयोग के प्रश्न 25

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
  - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
  - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अन्तराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अन्तराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
  - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
  - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें** — जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
  - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
  - **पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें** — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
  - **उपयोग के प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें** — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

तैयारी

- पढ़ें उत्पत्ति 2:4–3:24

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:25)

यद्यपि उत्पत्ति 2-3 एक लम्बा प्रसंग है और कई विषयों को स्पर्श करता है, तौभी यह वास्तव में एक एकीकृत कथा के रूप में है।

II. साहित्यिक संरचना (2:23)

A. सिंहावलोकन (3:03)

1. वाटिका में (3:31)

2. उन्नत परिस्थिति (4:09)

यह भाग एक नई समस्या को परिचित कराते हुए आरम्भ होता है (उत्पत्ति 2:18)।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. श्रापित परिस्थिति (4:59)

यह सामग्री एक नए विषय और पात्र के परिचय के साथ आरम्भ होती है : परीक्षा में डालने वाला सर्प।

4. अदन से बाहर (5:35)

परमेश्वर जीवन के वृक्ष की समस्या के लिए बोलता है।

परमेश्वर के प्रत्यक्ष हस्तक्षेप को छोड़कर, मनुष्य अब अदन की वाटिका तक पहुँच नहीं सकता है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

B. समरूपता (6:29)

1. आरम्भ और अन्त (7:01)

उत्पत्ति 2:4-17 और 3:22-24 कम से कम तीन महत्वपूर्ण तरीकों से एक दूसरे से विपरीत हैं :

- स्थान :
  - 2:4-17 : आदम वहाँ रहता और कार्य करता था जो दिव्य आशीषों भरपूर था।
  - 3:22-24 : परमेश्वर ने आदम और हव्वा को अदन में से निकाल दिया।

- वृक्ष :
  - 2:4-17 : ज्ञान के वृक्ष पर बल।
  - 3:22-24: जीवन के वृक्ष पर बल।

- मनुष्य के अधिकार :
  - 2:4-17: परमेश्वर ने आदम को वाटिका में कार्य करने के लिए बिना किसी पीड़ा और परेशानी के द्वारा आशीषित करके अधिकृत किया।
  - 3:22-24: परमेश्वर ने आदम और हव्वा को वाटिका से दूर कर दिया और उन्हें वाटिका से बाहर कठिन परिश्रम करने के द्वारा सजा दी।

विरोधाभासों की यह सूची प्रत्यक्ष में इस्राएलियों की परिस्थिति के बारे में बोलती है जब मूसा ने उनका नेतृत्व प्रतिज्ञात् भूमि की ओर किया।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. मध्यांतर के हिस्से (10:34)

तीन विरोधाभासी समरूपताएँ :

- परमेश्वर के साथ मनुष्य के सम्बन्ध :
  - 2:18-25 : परमेश्वर और मनुष्य के मध्य घनिष्ठता और शान्ति
  - 3:1-21 : परमेश्वर और मनुष्य के मध्य स्थित आरम्भिक सामंजस्य के स्थान को असामंजस्य ने ले लिया

- मनुष्य के सम्बन्ध :
  - 2:18-25 : परिपूर्ण आनन्द
  - 3:1-21 : पुरूष और स्त्री के मध्य में कलह

- बुराई के साथ सम्बन्ध :
  - 2:18-25 : बुराई अनुपस्थित है
  - 3:1-21 : बुराई के साथ दीर्घकालिक-संघर्ष

मूसा ने आदम और हव्वा के बारे में इस तरह से लिखा जो कि इस्राएलियों के अनुभव के साथ सम्बन्धित हुआ।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

III. मूल अर्थ (13:47)

मूसा ने उसके आदिकालीन इतिहास को उसके लोगों को समकालीन धार्मिक और सामाजिक कार्यक्रमों के व्यवहारिक निर्देश देने के लिए लिखा, विशेषकर जब वे मिस्र से कनान की ओर जा रहे थे।

मूसा ने इस्राएल को आदम के पदचिन्हों का पता लगाने और इसके प्रतिलोम में चलने के लिए इन विषयों पर ध्यान दिया।

A. वाटिका (15:19)

मूसा ने अदन की वाटिका की पहचान प्रतिज्ञात् भूमि के साथ कराई।

1. पहचान (16:11)

एक एकलौती महानदी अदन से बाहर निकलती थी जो चार धाराओं में विभाजित हो जाती थी :

- पीशोन्
- गीहोन्
- हिद्देकेल्
- फरात

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

नाम “अदन” :

- बाबुल की भाषा में : “ईडिन” का अर्थ है "एक मैदान" या "खुली सपाट भूमि"

- इब्रानी भाषा में: “ईडेन” का अर्थ है "एक रमणीय या सुखद स्थान"

स्थान :

- अदन की नदी ने हिद्देकेल और फरात नदियों को पोषित किया।

- इसलिए अदन हिद्देकेल-फरात के क्षेत्रों तक सीमित नहीं था।

- अदन हिद्देकेल-फरात से लेकर वर्तमान के दक्षिणी तुर्की और मिस्र की सीमा तक विस्तृत था।

- इसमें वह सारा क्षेत्र था जिसे हम आज के समय “उपजाऊ अर्द्धचन्द्र” कहते हैं।

परमेश्वर ने अब्राहम और उसके वंशज् को जिस भूमि को देने की प्रतिज्ञा की थी किसी समय वह अदन की भूमि के नाम से जानी जाती थी।

2. पवित्रता (22:14)

प्रतिज्ञात् भूमि वह स्थान था जहाँ इस्राएल परमेश्वर की विशेष उपस्थिति में प्रवेश कर सकता था।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

मूसा ने अदन का विवरण इस प्रकार दिया जो तम्बू पर भी लागू हुआ।

अदन के कम से कम सात पहलुओं से यह संकेत मिलता है कि यह मिलाप वाले तम्बू की तरह परमेश्वर की उपस्थिति के लिए एक पवित्र स्थान था :

- परमेश्वर वाटिका में चला फिरा
- जीवन का वृक्ष
- सोना/सुलैमानी पत्थर
- स्वर्गदूत
- प्रवेश मार्ग
- सेवकाई
- छ: दिन

कनान के निकट होने का अर्थ परमेश्वर के द्वारा उस पवित्र स्थान के निकट होने से था जिसमें परमेश्वर आरम्भ से निवास कर रहा था।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

कनान की भूमि मूसा के दिनों में जो कुछ वास्तव में अदन था उसकी छाया मात्र थी। तौभी, मूसा ने इस्राएलियों को यह दर्शन दिया कि उनकी भूमि एक दिन कैसी हो सकती है।

B. विश्वासयोग्यता (29:31)

मूसा चाहता था कि इस्राएली यह स्मरण रखें कि प्रतिज्ञात् भूमि इस्राएल से परमेश्वर के आदेशों के प्रति विश्वासयोग्य रहने की माँग करती है।

1. अदन में (30:29)

परमेश्वर आदम और हव्वा की जाँच यह देखने के लिए कर रहा था कि वे उसके प्रति निष्ठावान बने रहेंगे या नहीं।

- यदि आदम और हव्वा आज्ञाकारी रहते, तो वे परमेश्वर की ओर से और भी ज्यादा आशीषों को प्राप्त करते।

- यदि वे उदण्डता को प्रमाणित करते, तो वे परमेश्वर के न्याय से दुख उठाते।

2. कनान में (31:43)

परमेश्वर ने यह माँग की कि इस्राएल उसके प्रति विश्वासयोग्य रहे ताकि वे कनान की भूमि में प्रवेश करें और इसे अपने अधिकार में ले सकें।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

प्रतिज्ञात भूमि की आशीषें शर्तरहित नहीं थीं :

- यदि इस्राएल ने कनान में रहने के सौभाग्य का दुरूपयोग किया तो वे उन जातियों के समान नष्ट किए जाएंगे जिनको परमेश्वर उनके सामने नष्ट किया था।

- यदि इस्राएल विश्वास के साथ परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति समर्पित होकर पवित्र लोगों के समान रहता है तो वे उस भूमि में प्रवेश करेंगे और शांति के साथ वहां रहेंगे।

C. परिणाम (35:46)

1. मृत्यु (36:23)

परमेश्वर ने आदम और हव्वा को उनके पाप के फलस्वरूप मृत्यु की चेतावनी दी।

वाटिका में परमेश्वर की आज्ञा के प्रति अविश्वासयोग्यता के परिणाम :

- मनुष्य के पहले माता पिता के ऊपर मृत्यु की सजा

- यही सजा इस्राएलियों पर बनी रही जो परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति बहुत ही अविश्वासयोग्य प्रमाणित हुए

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. पीड़ा (38:54)

पीड़ा का प्रभाव आदम और हव्वा दोनों पर लागू हुआ।

मूसा इस्राएल को ऐसे स्थान की ओर लेकर जा रहा था जहाँ पर वह पीड़ा जिसका उन्होंने कनान के बाहर रहते हुए अनुभव किया, से उन्हें राहत मिलनी थी।

3. बहिष्करण (40:57)

आदम और हव्वा को वाटिका और इसके जीवन के वृक्ष से बहिष्कृत कर दिया गया।

जीवन के वृक्ष तक की पहुँच को मनुष्य के लिए सदैव के लिए वर्जित नहीं किया गया था।

IV. आधुनिक उपयोग (43:57)

A. उदघाटन (45:18)

राज्य के उदघाटन में, मसीह ने उसका पता लगाया जो आदम और हव्वा ने अदन की वाटिका में किया था उसके प्रभाव को पलट दिया। मसीह ने परमेश्वर की उन आज्ञाओं को पूरा किया जहाँ पर आदम और हव्वा असफल हो गए थे।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

1. पौलुस (45:43)

- रोमियों 5:14

- रोमियों 5:18-19

आदम का एक अपराध सारे मनुष्य के ऊपर दण्ड का कारण ठहरा, परन्तु मसीह का धर्म का एक कार्य सारे मनुष्यों के लिए धार्मिकता का कारण ठहरा।

नया नियम यह शिक्षा देता है कि मसीह हमारा उस प्रत्येक मनुष्य के लिए संघीय या वाचा का प्रतिनिधि है जिसका उसमें विश्वास है।

2. मत्ती (48:47)

मत्ती मसीह की परीक्षा के मत्ती 4:1-11 में दिए हुए विवरण में उस तरीके की ओर ध्यान आकर्षित करता है जिसमें मसीह ने आदम के पाप का पता लगाया उसे पलट दिया।

- स्थान : जंगल

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- समय की अवधि: 40 दिन / 40 वर्ष

- भूख

- पवित्रशास्त्र का उपयोग : यीशु ने परीक्षा के वचनों को याद किया

- स्वर्गदूत : जब यीशु अपनी परीक्षा में सफल रहा तो परमेश्वर ने स्वर्गदूतों के कार्य को बदल दिया और उन्हें उसकी सेवा में लगा दिया।

B. निरन्तरता (52:18)

राज्य की निरंतरता के दौरान उन इस्राएलियों के समान मसीह के अनुयायियों की परीक्षा होती है और उन्हें परखा जाता है जिन्होंने पहले से आदम और हव्वा के बारे में पढ़ा हुआ था।

1. पौलुस (52:48)

पौलुस ने सबसे बुरी तरह की निष्ठाहीनता के विरूद्ध चेतावनी देने के लिए हव्वा के नकारात्मक उदाहरण की ओर संकेत किया – जो कि मसीह के सच्चे सुसमाचार से दूर होना है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. याकूब (53:55)

जीवन और मृत्यु में अंतर आदम और हव्वा की कहानी में जीवन के वृक्ष के दिए जाने और मृत्यु की चेतावनी के विषयों के समानान्तर है।

पौलुस और याकूब ने हमें राज्य की निरन्तरता में जाँचों के दौरान निष्ठावान बने रहने के लिए उत्साहित किया है।

C. पराकाष्ठा (55:38)

1. रोमियों (56:03)

रोमियों 16:20 में पौलुस ने उत्पत्ति 3:15 की उद्धार की प्रतिज्ञा का उल्लेख किया।

2. प्रकाशितवाक्य (57:02)

यूहन्ना प्रकाशितवाक्य में कई स्थानों पर जीवन के वृक्ष का उल्लेख करता है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

आदम और हव्वा को अदन की वाटिका में बहिष्कृत कर दिया गया था ताकि उन्हें जीवन के वृक्ष में से खाने से दूर रखा जा सके। तौभी, जब मसीह वापस आएगा, परमेश्वर उसके लोगों को जीवन के वृक्ष में से खाने का अधिकार देगा।

यूहन्ना ने नए संसार को आदम और हव्वा द्वारा खोए गए स्वर्गलोक के फिर से पाए जाने के रूप में देखा।

V. सारांश (59:28)

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. उत्पत्ति 2:4–3:24 के मुख्य भागों का सिंहावलोकन प्रदान कीजिए।

2. इस अनुच्छेद के मुख्य भागों के बीच पाई जाने वाली महत्वपूर्ण समरूताओं को स्पष्ट कीजिए।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. मूसा ने किस प्रकार अदन की वाटिका को पहचाना और उसने वाटिका की पवित्रता को क्यों स्पष्ट किया?

4. स्पष्ट कीजिए कि किस प्रकार मूसा ने अदन और कनान दोनों में विश्वासयोग्यता के उद्देश्य को स्पष्ट किया।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. आदम और हव्वा की अविश्वासयोग्यता के परिणामों को स्पष्ट कीजिए।

6. स्पष्ट कीजिए कि किस प्रकार उत्पत्ति 2-3 की आदिकालीन की घटनाएं मूसा के दिनों के इस्राएलियों से संबंधित हैं?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. पौलुस और मत्ती किस प्रकार सिखाते हैं कि मसीह में उद्धार स्वर्गलोक की वापसी का उदघाटन है?

8. पौलुस और याकूब के अनुसार वाटिका में आदम और हव्वा के विषय में मूसा का विवरण किस प्रकार राज्य की निरंतरता से संबंधित है?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

9. नए नियम के अनुसार किस प्रकार वाटिका में आदम और हव्वा की कहानी राज्य की पराकाष्ठा पर लागू होती है?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. आदिकालीन इतिहास में मूसा ने इस बात को दोहराया कि किस प्रकार पाप की बुराई ने परमेश्वर और उसके लोगों और लोगों के एक दूसरे के साथ संबंधों को बिगाड़ दिया था। आधुनिक जगत में हम इसके कौनसे प्रभावों को देख सकते हैं?

2. इस्राएलियों के लिए कनान की भूमि अदन की वाटिका की परछाई थी। मूसा ने इस्राएलियों के सामने इस बात का दर्शन रखा कि उनकी भूमि एक दिन कैसी हो सकती है। प्रतिज्ञा की भूमि का कैसा दर्शन आज के विश्वासियों को रखना चाहिए? क्यों?

3. परमेश्वर अपने लोगों को क्यों परखता है? किन रूपों में परमेश्वर ने आपको परखा है? क्या आप विश्वासयोग्य रहे हैं?

4. मूसा ने इस्राएलियों को स्पष्ट किया कि कनान की भूमि को प्राप्त करना जीवन की आशीष का पहले से स्वाद लेने जैसा होगा, परन्तु यह उनकी आज्ञाकारिता पर निर्भर करेगा। आधुनिक संसार में मसीही भविष्य की कौनसी आशीषों का स्वाद पहले से ही चख रहे हैं? क्या ये आशीषें भी किसी शर्त पर आधारित हैं?

5. आज के विश्वासी इस बात से कैसी आशा को प्राप्त कर सकते हैं कि मसीह ने आदम और हव्वा की अवज्ञाकारिता से उत्पन्न नुकसान को पलटना आरंभ कर दिया है?

6. पढ़ें याकूब 1:12-15। याकूब किस प्रकार राज्य की निरंतरता के दौरान कष्टों के विषय में दृष्टिकोण प्रदान करता है? यह विश्वासियों को किस प्रकार परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने में उत्साहित कर सकता है?

7. पढ़ें प्रकाशितवाक्य 22:12। यूहन्ना ने जब आगे देखा तो उसने उस खोए हुए स्वर्गलोक की वापसी के रूप में एक नए संसार को देखा। किस प्रकार इतिहास के लिए परमेश्वर के छुटकारे की योजना आपके जीवन को उद्देश्य और अर्थ प्रदान करती है?

8. इस अध्ययन से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है? क्यों?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org